Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

सीता का चरित्र विवेचन : कतिपय प्रबन्ध–काव्यों के विशेष सन्दर्भ में

डॉ0 मधु शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
नानकचन्द ऐंग्लो संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ,उत्तर प्रदेश।

सारांश–महाकाव्यों में सीता का चरित्र बड़ी विविधताएँ लिए हुए हैं। पुत्री, पत्नी, वात्सल्यमयी जननी, स्नेहिला भ्रातृजाया तपस्विनी तथा रण के प्रांगण में अपना शौर्य प्रदर्शन करने वाली वीरांगना के रूप में सीताजी का चरित्र रूपान्तरित हुआ है। वास्तव में नारी जाति के लिए वे प्रेरणास्रोत बनी हैं। जब तक भारतीय संस्कृति की अजस्र निर्मल धारा धरणीतल पर अस्तित्व में रहेगी, तब तक उनका चरित्र अनवरत अनुकरणी रहेगा। वे ध्रुवतारिका की भांति भारतीय तो क्या समूचे विश्व के मानस–पटल पर सदा–सर्वदा द्योतित होती रहेंगी।

मुख्य शब्द–महाकाव्य, सीता, चरितत्र, प्रबन्ध, भारतीय, संस्कृति, नाटक, नायक, वाल्मीकि।

महाकाव्यों तथा नाटकों में नायक का स्थान सर्वोपरि रहा है, परन्तु तत्तद् ग्रन्थों में नायक की भांति स्त्री पात्रों में नायिका भी उतना ही महत्त्व रखती है। वाल्मीकि रामायण की नायिका सीता से प्रारम्भ करके अद्यावधि रचित राम–महाकाव्यों में सीताजी ही नायिका के पद पर प्रतिष्ठित रही हैं। उनके चरित को महर्षि वाल्मीकि ने महत् निबद्ध किया है–

काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत्।[i]

आदिकवि ने सीता को उदात्त गुणों से युक्त नायक राम की तदनुरूपा धर्मपत्नी के रूप में चित्रित किया है–

युक्ता रामस्य भवती धर्मपत्नी गुणान्विता।।[ii]

सीता को विदेहराज जनक की पुत्री के रूप में अंकित कर कवि ने उन्हें एक महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया है। सीता की उत्पत्ति आलौकिक मानी जाती है तथा उन्हें अयोनिजा एवं भूमिजा माना गया है। विद्वानों के अनुसार वैदिक साहित्य की कृषि की अधिष्ठात्री देवी सीता का प्रभाव रामायण की सीता पर पड़ा है इसीलिए उन्हें जनक की औरस पुत्री की अपेक्षा पृथ्वी–पुत्री माना गया है।[पपप]

लंका में पहुँचकर हनुमान अशोकवन में सीता को त्रस्त एवं पीड़ित देखकर उसके लिए विलाप कर उठते हैं। इसी प्रसंग में हनुमान सीता के जन्म के विषय में भी प्रकार डालते हैं।

वाल्मीकि ने सीता को एक सुशिक्षिता, संस्कृत की पण्डिता नायिका के रूप में चित्रित किया है। इसका प्रमाण उस समय मिलता है जब सुन्दरकाण्ड में हनुमान द्वारा लाई गई रामनामांकित मुद्रिका को देखकर सीता प्रसन्न हो उठती है। साक्षर होने के साथ–साथ सीता का पद्यमयी नीतिकथाएँ भी कंठस्थ थीं क्योंकि लंका–विजय के पश्चात् हनुमान जब राक्षस पहरेदारिनों के ऊपर क्रुद्ध होकर सीता से उन्हें मार डालने की आज्ञा मांगने लगे थे, तब सीता ने उन्हें नीति–कथा सुनाकर इस विचार से विरत् कर दिया था। सुन्दरकाण्ड में, सीता से वार्तालाप करने से पहले, हनुमान का भाषा सम्बन्धी सोच भी सीता के शिक्षित होने का प्रमाण है।

इस शिक्षा–दीक्षा का सीता के व्यक्तित्व के विकास में भी बहुत बड़ा हाथ है। सीता अपने जीवन का प्रत्येक निर्णय लेने में पूर्णतया आत्मनिर्भर और स्वतन्त्र है। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण की नायिका सीता

अपने जीवन का मार्ग निश्चय करने के लिए परमुखापेक्षी नहीं है। उसे अपने उचित निर्णय के लिए किसी की सहमति अथवा अनुमोदन की भी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। यही कारण है कि राम को वनवास की आज्ञा होने पर सीता ने भी अपना भावी कार्यक्रम निश्चित कर लिया तथा राम द्वारा उसमें बाधा डाले जाने पर उनसे भी तर्क–वितर्क करके सीता ने उन्हें मनाया।

यशोधन–रघुवंशियों की फहराती हुई कलित–कीर्ति–पताका, चक्रवर्ती सम्राट–दशरथ की स्नुषा, निमि–कुल की तपस्याओं का सुफल, सूर्यवंशीय राजाओं के दिव्य–पुण्यों की प्रत्यक्ष परिपाक तथा पौलस्य मर्दन राज राजेश्वर श्रीराम की भार्या भूमिसुता सीता का पवित्र चरित्र हिन्दी साहित्य के प्रबन्ध–काव्यों का प्रमुख प्रेरक तत्व है। आर्य–ललनाओं के महान आदर्शों की प्रतीक रसा–तनया सीता के शील सौन्दर्य की स्निग्ध–ज्योत्सना इन प्रबन्ध–काव्यों के कथापटल को सर्वतः आवृत किये है। उनका तपः पूत चरित्र नारी–गुणों का चूडान्त–निदर्शन और आर्य गृहिणी के विशुद्ध पतिव्रत धर्म का चरम उत्कर्ष है। वे नारी के उस शाश्वत स्वरूप की प्रतिनिधि हैं, जो जीवन की विकटतम् परिस्थितियों में भी अपनी सृजनात्मक क्षमताओं का परिचय देता है।

भगवती सीता माता वसुन्धरा के रत्नपूरित गर्भ से कौस्तुभ मणि के समान प्रकट हुई, किन्तु तपः पूत निमिराज कुल द्वारा पालित और सर्वश्रेष्ठ राजकुल में विवाहित होने पर भी दुर्भाग्य का प्रचण्ड–मार्तण्ड सदैव उनकी जीवन–भूमि को संतप्त करता रहा। वे उपकार–धर्मा तरुवर के सदृश सतत् छाया देती रहीं और आतप सहती रहीं। उनकी कहानी व्यथा के रंगों से रंजित है। ये विश्व के लिये वरदान, पर स्वयं के लिये अभिशाप थीं। उन्होंने अपरिमित दारुण दुख सहे, माँ के गर्भ के स्थान पर कुम्भ की कारा पायी। विवाह के पश्चात् पति के साथ वन–वन की धूल छानी। वियोग–वन्हि में जलते हुये लंकापति रावण के त्रास सहे। उनकी कैद से छूटकर अग्निपरीक्षा दी, तथापि राम के आदर्श राज्य में प्रजा द्वारा कलंकित होकर निर्वासन पाया और वन के कंटकाकीर्ण पथों पर संघर्ष के गहरे पद–चिन्ह अंकित किये। उनका व्यक्तित्व संघर्ष की प्रबल झंझाओं में भी मणि के आलोक के समान देदीप्यमान बना रहा। उन्हीं सीता की अश्रु–स्नात करुणा–कथा से उद्वेलित कवियों का भाव रूपी हिम इन काव्य शिखरों की दिव्य सुषमा है।

हिन्दी साहित्य के इन प्रबन्ध काव्यों में सीता का व्यक्तित्व एक आदर्श–पति–परायणा, साध्वी, लोकोपकारिणी नारी और स्नेहमयी जननी की सार्थक अभिव्यंजना है। हरिऔध जी के शब्दों में वे लोक–ललामा, विपुल–मंजुल–गुण–धामा व सुकृति–स्वरूपा–सती हैं–

सति शिरोमणि पति परायणा पूत–थी
वह देवी हैं दिव्य भूतियों की भरी।।
हैं उदारतामयी सुचरिता सद्व्रता।
जनकसुता हैं परम पुनीता सुरसरी।।[iv]

अद्वितीय आन्तरिक सौन्दर्य से सम्पन्न सीता का बाह्य कलेवर भी अत्यन्त कोमल, कान्त और कमनीय है। वे स्वर्ण प्रभायुक्त सौम्यता की प्रतिमा हैं। वसुधा उन्हीं की कान्ति से कान्तिमयी हैं।[अ]

मित्र जी की 'भूमिजा', डॉ0 माया शबनम की 'अपराजिता सीता' आदि कृतियों में सीता का व्यक्तित्व वेदना से निर्मित दर्शाया गया है। वे नारी की उस मूक पीड़ा की मुखर अभिव्यक्ति हैं, जो सामाजिक विषमताओं व पुरुष के असहयोग के कारण, निर्दोष नारी को सहनी पड़ी है। मर्यादा की तथाकथित रक्षा में सन्नद्ध पुरुष का अहंकारी व्यक्तित्व नारी की नेह सिक्त प्रणयवलितं, सुख–सुरभित–कुसुमित दाम्पत्य–रूपी माधवी–लता पर सहसा पविपात कर देता है।[vi]

युग चेतना के अनुरूप इन प्रबन्ध–काव्यों में सीता के चरित्र को मानवीय संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। 'वैदेही वनवास' में वे स्वयं को साधारण नारी के रूप में व्यक्त करती हैं[vii] और सीता–परित्याग में वे लक्ष्मण के मुख से निर्वासन का वृत्त सुनकर साधारण नारी के समान ही शोकाकुल हो उठती हैं–

अति–शीत–विषम–जंवर–ग्रसित था अंग उनका कांपता

हृद–व्याध–पाशाबद्ध खग–सम दीन–व्याकुल हांफता।[viii]

'जानकी जीवन' में भी वे सामान्य मानवी के समान ही रोने लगती हैं–

मोद मग्ना मैथिली म्लाना हुई

इन्दु को अब्जाम्बु से धोने लगी।[ix]

कविवर छोटे लाल भारद्वाज ने सीता के नारी रूप का मानवीय धरातल पर चित्रण करने के लिए उनकी सामान्य मृत्यु दर्शायी है।[x]

इस प्रकार इन प्रबन्ध–काव्यों में सीता को परम्परागत पौराणिक लक्ष्मी के अवतार के स्वरूप से मुक्त कर लौकिक नारी के धरातल पर चित्रित किया गया है।

सीता विचारमयी नारी हैं। वैदेही वनवास में वे भौतिकता और आध्यात्मिकता विवेचन प्रस्तुत करती है।[xi] वनस्थली में वे कर्म और फल के सिद्धान्त की विवेचना करती हुई अपने निर्वासन का कारण बालि का वध और निर्दोष तारा की आहों का शाप मानती हैं।[xii]

'प्रवाद–पर्व' में सीता का वैचारिक व्यक्तित्व पूर्णतः निखर आया है। व्यवस्था पर अपना विचार व्यक्त करती हुई वे कहती हैं–

राज्य, न्याय और राष्ट्र
व्यक्तियों तथा
सम्बन्धों के ऊपर होने ही चाहियें
मैं या कोई भी
राष्ट्र न्याय और सत्य से बड़ा नहीं।[xiii]

सीता के चरित्र की यह वैचारिकता भारद्वाज जी की सीतायन में आद्युपान्त व्याप्त है। वे सम्पूर्ण महाकाव्य में वर्ण–व्यवस्था, पुरुष–प्रधान–संस्कृति, राजतंत्र आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त करती हैं।

भगवती सीता के चरित्र की प्रमुखतम विशेषता है– उनकी आदर्श पति भक्ति। अधिकांश प्रबन्ध–काव्यों में निरुपित उनका चरित्र इस वैशिष्ट्य का पोषक है। 'वैदेही–वनवास' में उनका यह स्वरूप सर्वोत्तम रूप में प्रकट हुआ है। डॉ0 मुकुन्द देव शर्मा के अनुसार, ''वैदेही अत्यन्त पति परायणा देवी हैं। वे उन भारतीय ललनाओं में हैं, जो प्रियतम के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होती है।[xiv] पति की आज्ञा का पालन करना उनका परम ध्येय और पति का प्रिय साधन उनका प्रथम कर्त्तव्य है।[xv]

'अयोध्या की एक शाम' में सीता स्वयं ही वन गमन के लिए स्वयं को प्रस्तुत कर देती हैं। यह उनका स्वतः परिवर्तित रूप है।

उत्सर्ग किया जाता है हंसी खुशी से
है गर्व मुझे, मैं बसी आपके मन में।
यश का अनन्त आकाश चढ़ो, रवि मेरे
मैं किरण आपकी दूर रहूंगी वन में।[xvi]

आचार्य सोहनलाल 'रामरंग' द्वारा प्रणीत उत्तर साकेत महाकाव्य में सीता का चरित्र पूर्णतया रूपान्तरित हुआ है। वे राज्य में रानी रहते हुए श्रीराम की उतनी चिन्ता नहीं कर पाती थीं, परंतु परित्याग पर अलग होने की स्थिति में उन्हें अपने प्रियतम श्रीराम की पीड़ा, एकाकीपन, चिन्तन असह्य हो रहा है। वे लक्ष्मण से कहती हैं कि वे मेरे प्रियतम तो बड़े संकोची स्वभाव वाले हैं, उनकी भाव–भंगिमा सुकोमल हैं; वे जीवन का खारा समुद्र कैसे पार कर पायेंगे? उनके तन में निहित गूढ़–तन अपना दुःख–दर्द किससे कहेगा? उस मन को अपना मन देकर क्षणभर बैठकर उनकी बात कौन सुनेगा?

वे मेरे संकोची प्रियतम, जिनकी भावावलि सुकुमारी।
कैसे पार करेंगे लक्ष्मण, यह जीवन का सागर खारी।।
उनके तन में छिपा मृदुल मन, किससे अपनी बात कहेगा।
फिर उस मन को, कौन स्वमन दे – मौन घड़ी भर बैठ सुनेगा।[xvii]

जानकी जी के परित्याग के निर्णय से लक्ष्मण पर वज्राघात हो गया। वे सीताजी से कुछ कह नहीं पाते तथा उनके नेत्रों से अश्रुधारा अवरुद्ध नहीं हुई तब सीताजी ने कहा कि अरे लक्ष्मण! तुम तो इन्द्रजीत मेघनाद के भी विजेता हो; तुम्हारे नेत्रों में नीर देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। प्रतापी रघुवंशी भी रोते हैं, यह बात तो मुझे आज ही ज्ञात हुई है। सूर्य यदि अन्धकार को प्रश्रय देगा तो जग उस पर कैसे विश्वास करेगा? आधार यदि अधीर हो गया तो कौन धैर्य को धारण करेगा? यदि महाकाल ने पलायन कर दिया तो कालकूट विषय कहाँ जाकर पचेगा?

इंद्रजीत के अरे! विजेता,
आज तुम्हारे नयनों में जल।
रघुवंशी भी रोया करते,
जान सकी यह मर्म, इसी पल।।
तमहर में भी तम को प्रश्रय,
कैसे जग विश्वास करेगा।
यदि आधार अधीर स्वयं हो,
कौन कहो फिर धीर धरेगा।।
असमय परिधि त्याग, क्या वारिधि–
प्रलयंकर का स्वांग रचेगा।
महाकाल ही करे पलायन,
कालकूट फिर कहां पचेगा।।[xviii]

एक विशेष दृष्टान्त सीताजी के नारी चरित्र का नारी जाति के लिए अनुकरणयी बन पड़ा है। यहाँ गर्भवती सीता का रण–प्रांगण में जाना वर्णित किया गया है। राम–लक्ष्मण के बन्दी बन जाने पर उन्हें शस्त्रास्त्र उठाने पड़ते हैं। वे भयंकर राक्षस शतकंधर का वध करके ही लौटती हैं। युद्ध हेतु सुसज्जित वीरांगना देवी स्वरूपा सीता का चरित्र–रूपान्तरण दृष्टव्य है। माता कैकेयी के साथ सजी सीता रणवेष में भुवनेश्वरी के समान प्रतीत हो रही है। धनुष बाण, खट्वांग, त्रिशूल, परशु, तलवार, भिंदिपाल और भालों से अलंकृत होकर सीता जी वीररस वासन्ती की त्रिभंगी में कामदेव के समान प्रतीत हो रही हैं। ऋषियों ने भी उस रूप को देखकर अवगत कर लिया कि इनमें त्रिभुवन का तेज समाहित हैं, क्योंकि आज इन्होंने आदिपुरुष को सहयोग प्रदान किया है। उस समय सीता के अन्दर काली माता का भयंकर रूप दिखाई दे रहा था। उनके नुपुरों में भगवान् शिव के डमरु का प्रलयंकर 'डम–डम' शब्द ध्वनित हो रहा था–

यों लगीं साथ कैकेयी के,

रण–वेष सजीं सिय वेदी पर।
ज्यों धूम्रावती भगवती सह,
श्रीभवुनेश्वरी सजीं सुंदर।।
धनु–शर–खट्वांग–त्रिशूल–परशु,
असि–भ्रिदिपाल भालों से सज।
सिय लगीं वीररस–वासंती–
की ललित त्रिभंगी कुसुमध्वज।।
ऋषियों ने देखा सीता में,
त्रिभुवन का तेज समाया है।
यह आदि–शक्ति ने आदिपुरुष–
का बढ़कर, हाथ बंटाया है।।
उस काल, दृष्टि में सीता की –
काली का नृत्य कराल दिखा।
नूपुर में डम–डम डमरु का–
मुखरित प्रलयंकर ताल दिखा।।[xix]

इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न महाकाव्यों में सीता का चरित्र बड़ी विविधताएँ लिए हुए हैं। पुत्री, पत्नी, वात्सल्यमयी जननी, स्नेहिला भ्रातृजाया तपस्विनी तथा रण के प्रांगण में अपना शौर्य प्रदर्शन करने वाली वीरांगना के रूप में सीताजी का चरित्र रूपान्तरित हुआ है। वास्तव में नारी जाति के लिए वे प्रेरणास्रोत बनी हैं। जब तक भारतीय संस्कृति की अजस्र निर्मल धारा धरणीतल पर अस्तित्व में रहेगी, तब तक उनका चरित्र अनवरत अनुकरणी रहेगा। वे ध्रुवतारिका की भांति भारतीय तो क्या समूचे विश्व के मानस–पटल पर सदा–सर्वदा द्योतित होती रहेंगी।

सन्दर्भ–

---

[i]. वाल्मीकि, रामायणम्, 1/4/7

[ii]. वही, 6/113/48

[iii]. बुल्के, कामिल, रामकथा उत्पत्ति और विकास, पृ० 293

[iv]. हरिऔध, वैदेही वनवास, पृ० 54

[v]. रामस्वरूप टंडन, सीता परित्याग, पृ० 13

[vi]. राजदेव सिंह कौशल, सीतायन, पृ० 11

[vii]. हरिऔध, वैदेही वनवास, पृ० 128

[viii]. रामस्वरूप टंडन, सीता परित्याग, पृ० 111

[ix]. राजाराम शुक्ल, जानकी जीवन, पृ० 239

[x]. छोटे लाल भारद्वाज, सीतायन, पृ० 251–252

[xi]. हरिऔध, वैदेही वनवास, पृ० 187–203

[xii]. नाथू लाल नम्र, वनस्थली, पृ० 102

[xiii]. नरेश मेहता, प्रवाद पर्व, पृ० 80–81

[xiv]. डॉ0 मुकुन्द देव शर्मा, हरिऔध और उनका साहित्य, पृ० 525–26

[xv]. हरिऔध, वैदेही वनवास, पृ० 176

[xvi]. गोविन्द अनिल, अयोध्या की एक शाम, पृ० 28

[xvii]. सोहन लाल 'रामरंग', उत्तर साकेत, द्वितीय खण्ड, पृ० 660

[xviii]. वही, पृ० 658–659

[xix]. वही, पृ० 584